समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

मासिक समाचार–पत्र

संस्करण–अष्तम् माह–जनवरी

Edition -VIII Month- JANUARY

बाहर–भीतर का अन्तर
–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

बाहर झाँका जब उसे,
बाहर दिखा न कोइ।
ज्यों ही मैं भीतर गया,
मैं भी तर गया सोइ।।

मैं भी तर गया सोइ,
सोइ नहिं पाया फिर मैं।
छूटे ज ग त – जं जा ल,
फिर कभी घिर न सका मैं।।

'र ज क' जान लीन्हा फिर
बाहर – भीतर अन्तर।
अ न्त र त म के तम के
होते ही छू म न्त र।।

अलविदा – 2020
स्वागतम् – 2021

कोरोना से लड़ रहे,
एक बरस से जंग।
लड़ते – लड़ते हो गए,
सभी बहुत अब तंग।।
सभी बहुत अब तंग,
सबक अब और न दो ना।
मास्क सेनिटाइजर सहित हाथों का धोना।।
'रजक' बीस की टीस
रहेगी याद युगों तक।
प्रभु इक्किस बरसे सुख
इतना, सब जाएँ छक।।

जाते – जाते दे रहा,
क्यों कर तू यह पेन।
कोविड उन्निस सँग मिला,
एक नया स्ट्रेन।।
एक नया स्ट्रेन,
बढ़ गई चिन्ता सबकी।
कैसे होगा, क्या कुछ होगा, चिन्ता सबकी।।
कहें 'रजक' नव वर्ष
खुशी क्या धूर मनाएँ?
नित्त नए मेहमान
वायरस कहाँ भगाएँ??

ऋद्धि–सिद्धि–समृद्धि सब
बरसे घर – घर ईस।
सब जग का मंगल करे,
दो हजार इक्कीस।।
दो हजार इक्कीस,
बीस नहिं दर्द सतावे।
वायरसों में जो लें
रस, उनको ले जावे।।
'रजक' धूर्त शी जिनपिंग
जैसे सब मर जावें।
धरती पर फिर सच्चे
जन मिल मोद मनावें।।

अमृत के समान है – आंवला

आयुर्वेद के अनुसार, आंवला एक ऐसा फल है, जिसके अनगिनत लाभ हैं। आंवला ना सिर्फ त्वचा, और बालों के लिए फायदेमंद है, बल्कि कई तरह के रोगों के लिए औषधि के रूप में भी काम करता है।आंवला का प्रयोग कई तरह से किया जाता है, जैसे– जूस, अचार , आंवले का मुरब्बा, चटनी आदि। आंवला में प्रचुर मात्रा में विटामिन, मिनरल, और न्यूट्रिएन्ट्स होते हैं, जो मानव शरीर के लिए बहुत ही उपयोगी है।आयुर्वेद में अमृतफल या धात्रीफल कहा गया है। वैदिक काल से ही आंवला का प्रयोग औषधि के रूप में किया जा रहा है।

चरक संहिता में आयु बढ़ाने, बुखार कम करने, खांसी ठीक करने और कुष्ठ रोग का नाश करने वाली औषधि के लिए आंवला का उल्लेख मिलता है। इसी तरह सुश्रुत संहिता में आंवला को अधोभागहर संशमन औषधि बताया गया है, इसका मतलब है कि आंवला वह औषधि है, जो शरीर के दोष को मल के द्वारा बाहर निकालने में मदद करता है।

1–डायबिटीज के मरीजों के लिए आंवला बहुत काम की चीज है। पीड़ित व्यक्ति अगर आंवले के रस का प्रतिदिन शहद के साथ सेवन करे तो बीमारी से राहत मिलती है।

2–पथरी की समस्या में भी आंवला कारगर उपाय साबित होता है। पथरी होने पर आंवले को सुखाकर उसका पाउडर बना लें, और उस पाउडर को प्रतिदिन मूली के रस में मिलाकर खाएं। इस प्रयोग से कुछ ही दिनों में पथरी गल जाएगी।

3–रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी होने पर, प्रतिदिन आंवले के रस का सेवन करना काफी लाभप्रद होता है। यह शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होता है, और खून की कमी नहीं होने देता।

4– आंखों के लिए आंवला अमृत समान है, यह आंखों की रौशनी को बढ़ाने में सहायक होता है। इसके लिए रोजाना एक चम्मच आंवला के पाउडर को शहद के साथ लेने से लाभ मिलता है और मोतियाबिंद की समस्या भी खत्म हो जाती है।

5–बुखार से छुटकारा पाने के लिए आंवले के रस में छौंक लगाकर इसका सेवन करना चाहिए।

6–शरीर में गर्मी बढ़ जाने पर आंवला सबसे बेहतर उपाय है। आंवले के रस का सेवन या आंवले को किसी भी रूप में खाने पर यह ठंडक प्रदान करता है। हिचकी तथा उल्टी होने की पर आंवले के रस को मिश्री के साथ दिन में दो–तीन बार सेवन करने से काफी राहत मिलेगी।

7–याददाश्त बढ़ाने में आंवला काफी फायदेमंद होता है। इसके लिए सुबह के समय आंवला के मुरब्बा गाय के दूध के साथ लेने से लाभ होता है,

इसके अलावा आप प्रतिदिन आंवले के रस का प्रयोग भी कर सकते हैं।

8–चेहरे के दाग–धब्बे हटाकर उसे खूबसूरत बनाने के लिए भी आंवला आपके लिए उपयोगी होता है।इसका पेस्ट बनाकर चेहरे पर लगाने से त्वचा साफ, चमकदार होती है और झुर्रियां भी कम हो जाती हैं।

9–बालों को काला, घना और चमकदार बनाने के लिए आंवले का प्रयोग होता है, इसके पाउडर से बाल धोने या फिर इसका सेवन करने से बालों की समस्याओं से निजात मिलती है।

10–आंवला शारीरिक क्रियाशीलता को बढ़ाता है।यह भोजन को पचाने में बहुत सहायता करता है। भोजन में प्रतिदिन आंवले की चटनी,मुरब्बा, अचार, रस चूर्ण आदि को शामिल करना चाहिये। इससे कब्ज की शिकायत दूर होती है, पेट हल्का श्रहता है, रक्त की मात्रा में वृद्धि होती है।

11–महिलाओं की समस्याओं के लिए बेहद लाभकारी माना गया है।

12–हड्डियों के लिए सर्वोत्तम औषधि है। आंवले के सेवन से हड्डियां मजबूत होती हैं।

13–आंवले के सेवन से तनाव में आराम मिलता है।नींद अच्छी आती है। आंवले का तेल सर को ठंडा रखता है।

14–आंवले का सेवन करने से बाह्य बीमारियों से लड़ने की क्षमता विकसित होती है।

15–यह संक्रमण से बचाव करता है। शरीर में फंगस आदि बीमारियों से बचाव करता है। आंवला शरीर को पुष्ट करता है।

16–मूत्र विकारों से छुटकारा दिलाता है। मूत्र विकारों में आंवले का चूर्ण फायदा करता है। आंवले का छाल और उसका सेवन करें तो लाभ होता है।

17–आंवले के रस का सेवन करने से वजन कम करने में सहायता मिलती है।

18–अगर किसी को नकसीर की समस्या है तो आंवले का सेवन लाभकारी है।

19–आंवला हमारे हृदय की मांसपेशियों के लिये उत्तम होता है। यह नलिकाओं में होने वाली रूकावट को समाप्त करता है।

20–यह उग्रता व उत्तेजना से शांति दिलाता है। अचानक से पसीना आना, गर्मी लगना, धातु के रोग, प्रमेय, प्रदर आदि चीजों में आराम दिलाता है।

21–आंवले के रस से बवासीर ठीक हो जाता है।

22–कुष्ठ रोग में भी आंवले का रस फायदेमंद होता है।

23–आंवले का पाउडर और शहद का सेवन करें। आंवले के रस में मिश्री मिलाकर सेवन करने से उल्टियों का आना बंद हो जाता है।

24–आंवले में ऐंटीओक्सिडेंट होते हैं जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।ये मौसम के कारण होने वाले वाइरल संक्रमण से भी बचाता है।

लोकतंत्र के नाम पर,
सबसे बड़ा कलंक।
सदा–सदा को बन गया
ट्रम्प मारकर डंक।।
ट्रम्प मारकर डंक
नाच नंगा करवाया।
अमरीकी संसद को
ही बंधक बनवाया।।
'रजक' दे रही है
धिक्कारी दुनिया सारी।
चुल्लू भर में डूब के
मरजा अत्याचारी।।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)
प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह
सम्पादकीय विभाग
संपादक–तरुण सिंह
सह–संपादक–अभय प्रताप सिंह,
संस्कृति सिंह
विशेष संवाददाता– तनुज कुमार

अब पश्चिम
बंगाल में
दिख लेगी
औकात।
शाह की शह
निश्चित 'रजक'
अरु ममता
की मात।।

समृद्ध भारत जागृति

विध्वंसक विश्व में नव वर्ष 2021 की शुभकामना

आईये नव वर्ष 2021 की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ अवलोकन करते हैं किया वर्ष कितनी खुशियां प्रदान कर सकता है मानवता को? कहा जाता है कि अतीत का अवलोकन ही भविष्य का दर्पण होता है अर्थात अतीत में हुई घटनाएं भविष्य में होने वाली संभावनाओं को काफी हद तक दर्शाती हैं। आइए वर्ष 2020 की तरफ नजर डालें– ' कोरोना महामारी' जो अभी तक समाप्त नहीं हुई है। निरंतर बढ़ता ईरान और अमेरिकी विवाद, साउथ चाइना सी में चीन की कार्यवाहीओं के विरुद्ध अमेरिका, जापान, भारत के मध्य विवाद, एलओसी पर पाकिस्तान की कार्यवाही तथा एलएसी पर चीन और भारत के बीच छिड़ा घमासान, जहां दोनों देश की सेना एक दूसरे के समक्ष खड़ी हैं। चीन का ताइवान पर कब्जा करने का निरंतर प्रयास उत्तर कोरिया के सनकी तानाशाह द्वारा अमेरिका को नया परमाणु बम बनाने के संबंध में दी जा रही चेतावनी, रूस का इस वर्ष 200 मिसाइलों का परीक्षण करने का ऐलान सहित समस्त छोटे व बड़े देशों द्वारा आधुनिक अस्त्र शस्त्रों का विकास तथा एकत्रित करने का कार्यक्रम निरंतर जारी है। इतना ही नहीं मिडल ईस्ट ओमान की खाड़ी ,साउथ चाइना सी, भारतीय एलओसी तथा एलएसी ताइवान की सीमा आदि संभावित युद्ध के मैदान बनते दिख रहे हैं। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हमारे देश भारत वर्ष में क्या चल रहा है? वर्ष 2020 में आतंकी स्थान पाकिस्तान में 5246 बार से अधिक सीजफायर का उल्लंघन किया भारत में आतंकियों की घुसपैठ कराने के लिए और यह प्रयास निरंतर जारी है।अभी चंद दिनों पहले सीमा पर बीएसएफ ने 150 मीटर लंबी उस सुरंग को खोज निकाला है जो पाकिस्तान की ओर से भारत में आतंकियों को घुसाने के लिए पाक द्वारा बनाई गई है। उधर एलएसी पर जहां चीन और भारत की सेना एक दूसरे के समक्ष खड़ी हैं और हिंद के हिम वीरों के समक्ष चीनी चमगादडों की कोई शैतानी चाल नहीं चल पा रही है। चीन तिब्बत के पहाड़ों पर निरंतर अपनी शक्ति प्रदर्शन कर रहा है। कहने का अर्थ यह है कि ईरान, तुर्की ,चीन, रशिया में अमेरिका अर्थात समस्त राष्ट्र युद्ध के उन्माद में निरंतर शक्ति परीक्षण कर रहे हैं। समस्त हमारे मानव बारूदी गंध से दूषित हो गई हों।यह तो एक संक्षिप्त सा शब्दों द्वारा अंकित किया गया चित्र है। जिसकी पृष्ठभूमि में वर्ष 2020 का बहुत बड़ा योगदान है। इसमें चांडाल शैतान तानाशाह चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की सर्व शक्तिमान(सुपर पावर) बनने की अति महत्वाकांक्षा ही सबसे बड़ा कारण है। अब निर्णय आपको करना है कि नववर्ष 2021 कितना मंगलमय होगा? पुनः नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित आपका शुभेच्छु।

संपादक
तरुण सिंह

योग तांत्रिक साधना के मन में मूल और प्राण।

दैवीय शक्ति के सामीप्य लाभ का एकमात्र साधन मंत्र साधना है। मंत्र सिद्धि के लिए मन की एकाग्रता, विचारों की स्थिरता और प्राणों पर संयम अति आवश्यक है एकांत होना चाहिए। नदी का तट, शमशान या पर्वत, शिव या शक्ति का मंदिर मंत्र साधना के लिए योग्य स्थान है। सभी प्रकार की तांत्रिक और योगिक साधनाएं मन के ऊपर निर्भर है और मन प्राण के ऊपर निर्भर है और प्राण की साधना ही एकमात्र योग और तंत्र साधना है।जिसने अपने मन और प्राण पर अधिकार प्राप्त कर लिया के लिए समस्त अभौतिक सफलताओं और समस्त सिद्धियों के मार्ग खुल जाते हैं। मन के अस्थिर और चंचल होने पर प्राण (श्वास –प्रश्वाश) स्थिर और चंचल हो उठता है। किसका है विचार जिसका जन्म होता है और प्राण के मूल तत्वों से।विचार में आधा मन है और आधा प्राण। मन की सहायता से वह स्थिर और एकाग्र होता है और प्राणों के योग से होता है गतिमान। मन प्राण और विचार तब तक अपने अपने स्थान पर अकर्मण्य अथवा अनुपयोगी है जब तक उनका योग गुरु शक्ति से नहीं हो जाता। गुरु शक्ति युक्त होने पर मन प्राण और विचार अपनी अपनी सीमाओं को तोड़कर और असाधारण हो उठते हैं। जिन्हें मनशक्ति ,प्राणशक्ति और विचार शक्ति कहा जाता है। जैसे– जैसे मन प्राण और विचार एकाग्र, स्थिर और संयमित होते जाते हैं। वैसे वैसे उन्हें आत्मशक्ति उपलब्ध होती जाती है (आत्मशक्ति का जो संबित रूप है पराशक्ति,परमा शक्ति, आद्याशक्ति ,महाशक्ति आदि नामों से जाना जाता है। इसी शक्ति का व्यबित रूप मानव शरीर में कुंडलिनी शक्ति है।

—शक्ति प्रताप सिंह

खुशियों से भरा नया साल मुबारक!!! सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्द परिवार की तरफ से आपको नए साल की हार्दिक शुभकामनाएं आप को व आपके परिवार को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाये, नए साल का हर नया दिन आपके लिए सुख, समृद्धि और सफलता लाये ।

होली और संगीत

पावन प्रेम का प्रतीक पर्व 'होली' हमारे देश के सर्वप्रमुख एवं प्राचीनतम त्यौहारों में से एक है। यह पारस्परिक प्रेम और भाईचारे को बढ़ाने वाला त्यौहार है। इसमें छोटे–बड़े, राजा–रंक और अमीर–गरीब के सभी भेद मिट जाते हैं। समस्त वर्जनाओं के बन्धन शिथिल पड़ जाते हैं।पारस्परिक रागात्मकता का वातावरण बनाने वाला यह त्यौहार मानव–हृदय को इतना सरस बना देता है कि उसका अन्तर्मन हास–परिहास, मौज–मस्ती और मनोविनोद की हिलोरें लेने लगता है।

हिरण्यकश्यपु के द्वारा अपने ही पुत्र नारायण–भक्त प्रह्लाद के उत्पीड़न की कथा अति प्राचीन काल से ही इस त्यौहार के साथ जुड़ी चली आ रही है। इसी प्रकार ढुंढा राक्षसी के आतंक की कथा भी इस त्यौहार के साथ सम्बद्ध है। यह पर्व जहाँ टधर्म पर धर्म एवं दानवत्त्व पर देवत्त्व की विजय का प्रतीक है,वहीं कृषि से भी इसका सम्बन्ध है। इन दिनों में फसल गहरा जाती हैं। धरा का धानी आँचल फलों से लद जाता है। होली पर ही नवान्न को भूनकर खाने का मुहूर्त किया जाता है। अपनी खुशी को प्रकट करने के लिए लोग गीत, वाद्य एवं नृत्य का सहारा लेते हैं। होली का नाम लेते ही राधा–कृष्ण एवं कृष्ण–गोपिकाओं की फाल्गुन मास की लीलाएँ तो मानों साकार हो उठती हैं।

यूँ तो दो दिनों तक यह पर्व सम्पूर्ण भारतवर्ष में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जाता है किन्तु ब्रज की होली का तो कहना ही क्या ? विश्व के कोने–कोने का व्यक्ति यहाँ की होली की एक झलक मात्र पाने के लिए लालायित रहता है। रंग–गुलाल के साथ सामूहिक रूप से खेलने का यह पर्व संसारभर में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में सम्भवतया सर्वाधिक अनुपम, दिव्य एवं अनोखा है। ब्रज–क्षेत्र में यह एक दिन या एक सप्ताह तक ही नहीं बल्कि बसन्त पञ्चमी से लेकर पूरे चालीस दिनों तक सम्पूर्ण वातावरण में रंग भरी उमंग पैदा कर, प्राणी मात्र के हृदय को झंकृत कर, फाल्गुनी मस्ती में मदमाता कर देता है। ब्रज चौरासी कोस में तो पूरे सत्तर दिनों तक यानि चौत्र मास की पूर्णिमा तक सङ्गीत की समाजें बैठतीं हैंय रसिया–दंगल और फूलडोल जैसे मेले होते हैं। मथुरा–वृन्दावन, नन्दगाँव–बरसाना, जाव–बठैन, फालेन–जटवारी आदि की होली एवं दाऊजी का हुरंगा तो जगह–जगह प्रसिद्ध हो चुके हैं। सङ्गीत में 'होली' और 'धमार' विशिष्ट गायकियों के नाम हैं। 'धमार' नामक ताल में गाई जाने वाली गायकी 'धमार' कहलाती है। संकीर्ण जाति की यह ताल चौदह मात्राओं की होती है तथा इसमें क्रमशः 5–2–3–4 मात्राओं के विभाग होते हैं। धमार गायकी का गायन अधिकांशतया ध्रुवपद गायक ही करते हैं, क्योंकि यह गायकी ध्रुवपद की भाँति ही होती है। अन्तर केवल इतना ही रहता है कि इसमें ध्रुवपद की अपेक्षा गाम्भीर्य कम होता है। धमारों की भाषा भी ध्रुवपद की भाँति ब्रज, हिन्दी अथवा उर्दू होती है। इस गायकी में भी ध्रुवपद की ही भाँति लयकारियों का प्रदर्शन किया जाता है। यदा–कदा बोल–तानों का भी प्रयोग अनेक लयों के साथ कुछ गायक करते हैं। धमार ताल कठिन होने के कारण नव–प्रशिक्षुओं को इसे सीखने में कुछ कठिनाई का अनुभव होता है। धमार गायन–शैली में भी –स्थाई और अन्तरा– दो ही भाग होते हैं। ध्रुवपद की भाँति इस गायकी की संगति में भी पखावज का प्रयोग किया जाता है।

जहाँ तक होली गायन–शैली की बात है, खयाल–गायक जब होली सम्बन्धी रचनाओं को विभिन्न तालों में गाते हैं तो वह गीत होली कहलाता है। खयाल–गायक ऐसी रचनाओं को तीनताल, कहरवा या दीपचन्दी आदि तालों में गाते हैं। इनमें गायक आलाप, तान, पलटे, खटके, मुर्की आदि का प्रयोग खयाल की तरह ही करते हैं। धमार और होली की विषय–वस्तु एक ही होने के बाद भी दोनों ही गायकियों में बहुत अन्तर होता है। धमार में जहाँ गाम्भीर्य होता है वहीं खयाल गायकों की होली में चांचल्य की प्रधानता रहती है। धमार जहाँ पखावज जैसे गाम्भीर्य युक्त वाद्य पर गाई जाती है, वहीं खयाल की संगति हेतु तबला ही सर्वाधिक उपयुक्त वाद्य होता है। धमार और होली गायकियों के अतिरिक्त 'ठुमरी' नामक गायन–शैली में भी होली की छटा खूब देखने को मिलती है। यथा–

''बरजोरी करो न मोसे होरी में।''

लोक–गीतों में भी 'होरी' नामक लोक–गीत बेहद पसन्द किए जाते हैं। 'होरी' नामक लोक–गीत का प्रिय ताल 'चाँचर' या 'चर्चरी' है। ब्रज में राग काफी की होरी बेहद लोकप्रिय हैं। ऐसी होरी पहले विलम्बित लय में प्रारम्भ की जाती है और अन्त में द्रुत लय में लेने के लिए पूर्वाधारित ताल से हटकर अधिकांशतः कहरवा ताल में मोड़ दी जाती हैं, जो श्रोतागण को रस–विभूत कर देती हैं।

वैष्णव मन्दिरों की होली:

वैष्णव मन्दिरों में होली का प्रारम्भ बसन्त पञ्चमी से ही हो जाता है और ब्रज–बालाएँ गाँ उठती हैं–

''आई हम नन्द के द्वारे।
खेलत फाग बसन्त पञ्चमी,
सुख–समाज विचारे।।''
– सूरदास

मन्दिरों में सन्तों द्वारा रचित विशिष्ट पदावलियों का गायन प्रारम्भ हो जाता है। अकबरी दरबार के प्रसिद्ध इतिहासकार 'अबुल फज़ल' ने 'आईने अकबरी' में कीर्तनियाँ नामक सङ्गीत –जीवी ब्राह्मणों की चर्चा की है और इनके प्रमुख वाद्य रबाब, पखावज और ताल या झाँझ बताए हैं। वर्तमान में रबाब जैसे ईरानी वाद्य का स्थान फ्रांसीसी वाद्य हारमोनियम ने ले रखा है। मन्दिरों में होली के दिन तो प्रातः से सायंकाल तक होली के पद ही गाए जाते हैं। यहाँ तक कि शयन में भी 'कोऊ भलौ–बुरौ जिन मानों, आज रँग होरी है' आदि भाव–पद गाए जाते हैं। वैष्णव–सम्प्रदाय के मन्दिरों में आज भी होली की समाज–गायकी का आनन्द लिया जा सकता है। पुष्टिमार्गीय या वल्लभ–सम्प्रदाय के मन्दिरों में तो होली की धूम दर्शनीय होती है। इन मन्दिरों में कीर्तनियाँ 'हवेली–सङ्गीत' (जिसे वास्तव में कीर्तन–सङ्गीत या संकीर्तन–सङ्गीत अथवा वैष्णव सङ्गीत या मन्दिर–सङ्गीत कहा जाना चाहिए) के अन्तर्गत होरी की धमारें तो गाते ही हैं, ब्रज की सर्वाधिक प्रसिद्ध लोक–गायकी 'रसिया' का गायन भी बड़े चाव से करते हैं। ब्रज का सर्वाधिक प्रसिद्ध रसिया है–

''आज बिरज में होरी रे रसिया।
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।।''

होली की रंगत में राधा–कृष्ण ही क्या, सभी देवगण रँग जाते हैं। भोलेनाथ शिव शंकर के सन्दर्भ में एक प्रसिद्ध होली–गीत के बोल हैं–

''मैं कैसे होरी खेलूँ री,
या बावरिया के संग।
अंग भभूत गले विष–माला,
लटन विराजे गंग।।''

वास्तव में होली एक ऐसा त्यौहार है जिसमें देशकाल के समस्त बन्धन भी रसिकों द्वारा तोड़ दिए जाते हैं। भावनात्मक एकता की तो एक–से–एक अनूठी मिसालें इस त्यौहार पर देखने को मिल जाती हैं।किसी लोक–कवि ने क्या अजब लिखा है–

''मची होरी रे मची होरी,
राजा बलि के द्वार मची होरी।
एक ओर खेलें कुमर कन्हैया प्यारे,
दूजी लंग राधा गोरी।।''

मन्दिरों में गाए जाने वाले राग :

होली के दिनों में न अधिक गर्मी होती है और न अधिक सर्दी। मौसम शीतोष्ण रहता है, जो बड़ा ही सुहावना लगता है। अतः मन्दिर–सङ्गीत में –ठण्डे एवं गर्म– दोनों ही प्रकार के रागों का पर्याप्त प्रयोग होता है। भैरव, विभास, पंचम, खट, ललित, देवगन्धार, सुघराई, रामकली, बिलावल, आसावरी, तोड़ी, जैतश्री, धनाश्री, काफी, सारंग, नट, पूर्वी, मारू, सोरठ, गौरी, रायसा, कल्याण, ईमन, हमीर, कान्हड़ा, नायकी, केदारा, जैजैवन्ती तथा बिहागड़ा आदि रागों में होरी की धमारें सुनी जाती हैं। धमार गायकी में गायक और पखावजी की मीठी छेड़–छाड़ भी होती है, जो सहज ही श्रोताओं के मन हर लेती है।

वाद्यों का प्रयोग :

जिस प्रकार होली में सभी प्रकार की वर्जनाएँ समाप्त हो जाती हैं और सभी घुल–मिलकर इस त्यौहार को मनाते हैं, उसी भाँति होली में सभी प्रकार के वाद्य–यन्त्रों के प्रयोग का उल्लेख मिलता है। अष्टछापी काव्य में श्री कृष्णदास जी विरचित होली के एक ही पद ''चल री सिंह पौर चाँचर मची जहाँ खेलत ढोटा दोय'' में लगभग 30 वाद्यों का उल्लेख मिलता है, जो होली में सभी प्रकार के वाद्यों के प्रयोग को दर्शाता है।

मुगल शासन में होली :

इतिहास गवाह है कि होली का हल्ला और धमारों की धमक लोक–जीवन या मन्दिरों तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि मुगलकालीन राज–दरबार एवं सङ्गीत–सभाओं में भी होली की रंगीनियाँ छाई रहीं।होली के दिन जलालुद्दीन बादशाह अकबर विशेष रूप से अपने दरबार में आयोजन रखते थे। हरम में जाकर होली खेलते थे।बेगम अपने बादशाह को गुलाल का टीका लगाकर रंग–गुलाल की वर्षा करती थी। जवाब में बादशाह अकबर भी बेगम को रंग–गुलाल से सराबोर कर देते थे। अकबर को होली का त्यौहार बहुत प्रिय था। 'तुजुकी जहाँगीर' में उल्लेख है कि बादशाह जहाँगीर भी होली खेलने के बेहद शौकीन थे। शाहजहाँ के दरबार में भी होली की धमालें मचा करती थीं। और तो और औरंगजेब तक मंगलामुखियों के साथ 'धमारी' खेलते थे। मुहम्मद शाह तो होली के रंग में ऐसे रंगे कि 'रंगीले' के नाम से ही प्रसिद्ध हो गए। नवाब वाजिद अली शाह नौ दिनों तक होली का त्यौहार मनाते थे। शानो–शौकत के साथ शाही महल सजाया जाता था। केशर मिश्रित रंग तैयार किया जाता था। चाँदी की सुन्दर तश्तरियों में रंग–गुलाल एवं पिचकारियाँ सजाकर रखी जाती थीं और फिर प्रारम्भ होता था महल की शहजादियों के साथ आम बालाओं का होली खेलने का ऐसा दौर, जहाँ केवल और केवल होता था उन्मुक्त, रंगीन और स्वच्छन्द वातावरण।नृत्य–गान से महफिलें सज उठती थीं। सदारंग, अदारंग, मनरंग और नूररंग आदि अनेक कलाकारों ने होली के रम्य चित्र अपनी गेय रचनाओं के माध्यम से उकेरे हैं। अनेकानेक अज्ञातनाम रसिकों ने भी इस प्रकार की रचनाओं में श्रीवृद्धि की है। उस समय दरबारों में बीन अर्थात् वीणा और पखावज का प्रयोग होता था।

फिल्मों में होली :

भारतीय सिनेमा भी होली के रंगों से अछूता नहीं रहा है। फिल्मों में भी एक–से–एक सुन्दर होलियाँ गाई गई हैं। फिल्म 'मदर इण्डिया' का होली–गीत ''होली आई रे कन्हाई, रंग छलके, सुना दी जरा बाँसुरी'' तो आज भी लोगों को बेहद प्रिय है।

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल
(संगीतज्ञ, लेखक, सम्पादक, कवि)
''सङ्गीत–सदन''
94, महाविद्या कॉलोनी–11,
मथुरा–281 001 (उ.प्र.)
मो. 9897247880 (व्हाट्सएप्प)
8851402815 (जिओ)
ई–मेल : rkagrawal19256@gmail.com

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

मुगलकालीन संगीत

मुगल काल का प्रारम्भ 1526 में बाबर द्वारा इब्राहिम लोदी को हराकर दिल्ली के तख्त पर आरूढ़ होने के साथ हुआ। बाबर उच्चकोटि का गायक, संगीत–मर्मज्ञ व गीतों का रचनाकार था। उसके साथ भी अनेक गायक–वादक भारत आए। जीवनभर संगीत–प्रेमी रहे बाबर को भारतीय नृत्य से अरुचि थी,किन्तु अरेबियन व तुर्की नृत्य पसन्द करता था। उसने अपने सम्बन्धी सुल्तान हुसैन मिर्जा के आठ कलाकारों की चर्चा की है।बाबर के उपरान्त हुमायूँ (1530–1556) एक दार्शनिक विचारधारा का भारतीय संगीत व संगीतज्ञों का अत्यधिक आदर करने वाला सम्राट था। उसने अहल–ए–मुराद के अन्तर्गत 29 गायकों व वादकों को विशिष्ट स्थान दिया। बैजू भी कुछ दिन हुमायूँ के पास रहेथे। मुगल कालीन सम्राटों में अकबर(1556–1605) के समय संगीत का सर्वाधिक विकास हुआ। हुमायूँ की भाँति अकबर ने भी संगीत को मनोविनोद व विलास के स्थान पर मोक्ष का साधन माना। उसने भारतीय व इस्लाम दर्शन,धर्म,चिन्तन में समन्वय का प्रयास भी किया और कला को धर्म से जोड़ते हुए उसे आध्यात्मिक शक्ति के रूप में स्वीकार किया। उसने तानसेन को अपने दरबार के 36 श्रेष्ठ संगीतज्ञों में विशिष्ट स्थान देते हुए 'मिर्जा' का सम्मान दिया और 'कंठाभरण–वाणी–विलास'' की उपाधि से विभूषित किया। अबुल फज़ल के अनुसार – ''गत एक हजार वर्षों में ऐसा संगीतकार भारतवर्ष में नहीं हुआ था। उसने यमुना के प्रवाह को अपने संगीत से रोक दिया था।'' उसके दरबारी संगीतज्ञों में रामदास का भी विशिष्ट सीन था। बैरम खाँ ने बाबा रामदास को एक लाख टका का उपहार दिया था। स्वामी हरिदास तथा उनके शिष्य बैजू, गोपाल, मदनलाल, दिवाकर, सोमनाथ और राजा सूरसेन अकबर के समय के प्रसिद्ध गायक थे।अकबर के शासन काल में लगभग 1550 ई. में कर्नाटकसंगीत पर रामामात्य द्वारा सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'स्वरमेल–कलानिधि' का प्रणयन हुआ और 1599 ई. के लगभग पुण्डरीक विट्ठल द्वारा चार संगीत–ग्रन्थों (सद्रागचन्द्रोदय, रागमाला, रागमंजरी, नर्तन निर्णय) का लेखन हुआ। ध्यातव्य है कि ये दोनों ही ग्रन्थकार अकबरी दरबार के नहीं थे।अकबर के दरबारी संगीतज्ञों में तानसेन ने अनेक प्राचीन रागों में न्यूनाधिक परिवर्तन करके मियाँ की सारंग, मियाँ की मल्लार, मियाँ की तोड़ी और दरबारी कान्हड़ा जैसे नवीन रागों का सृजन किया। इसी प्रकार रामदास ने रामदासी मल्लार, चरजू ने चरजू की मल्लार तथा बिलास खाँ ने बिलासखानी तोड़ी नामक रागों का अविष्कार किया। अकबर के समय में संगीत जहाँ एक ओर राज–दरबार की शोभा बढ़ा रहा था, वहीं दूसरी ओर भक्त –संगीतज्ञ और कवियों द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति हेतु भक्ति की धारा प्रवहमान हो रही थी। इन साधकों में श्री स्वामी हरिदास, तुलसीदास, मीराबाई और अष्टछापी भक्त कवि–संगीतज्ञों आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।यहाँ हम यह भी बता देना चाहते हैं कि जैसा कि प्रचारित है कि अकबर एक महान् सङ्गीत और कला–प्रेमी शासक था और उसके शासन – काल को स्वर्ण–युग के रूप में देखा जाता है। यही नहीं, उसकी सच्चरित्रता के सम्बन्ध में आज भी बड़े – बड़े कसीदे पढ़े जाते हैं, किन्तु यहाँ हम जिस एक ऐतिहासिक घटना का उल्लेख कर रहे हैं, उससे अकबर दि ग्रेट के चरित्र के ऊपर भी एक बदनुमा दाग तो लग ही जाता है।

किस्सा इस प्रकार है – अकबर प्रतिवर्ष दिल्ली में नौरोज का मेला आयोजित करवाता था, जिसमें पुरुषों का प्रवेश निषेध था।अकबर इस मेले में महिला की वेष–भूषा में जाता था और जो महिला उसे मन्त्र–मुग्ध कर देती, उसे दासियों के माध्यम से छल–कपट से अपने पास बुला लेता था।एक दिन नौरोज के मेले में मेवाड़ सूर्य महाराणा प्रताप की भतीजी वीरांगना किरण देवी (जो उनके छोटे भाई महाराज शक्तिसिंह की पुत्री और बीकानेर नरेश के अनुज पृथ्वीराज की धर्मपत्नी थीं) एक दिन मेले में मीना बाजार की सजावट देखने के लिए पहुँच गईं।बाईसा किरणदेवी की सुन्दरता को देखकर अकबर अपने आप पर काबू नहीं रख पाया और उसने बिना सोचे–समझे कुट्टिनियों (दासियों) के माध्यम से धोखे से जनाने महल में उन्हें बुला लिया। विषयान्ध पामर अकबर ने बहुत–से प्रलोभनों को देते हुए जैसे ही बाईसा किरणदेवी को स्पर्श करने की कोशिश की, त्यों ही रणचण्डी किरण देवी ने कमर से तेज कटार निकाली और शुम्भ–निशुम्भ की तरह अकबर को धरती पर पटक कर, उसकी छाती पर पैर रखकर कहा–नीच ! नराधम ! तुझे पता नहीं, मैं किस कुल की हूँ। मैं महाराणा प्रताप की भतीजी हूँ, जिनके नाम से तेरी नींद उड़ जाती है। मेरी धमनियों में बप्पा रावल और सांगा का रक्त है। बचना चाहता है तो मन में सच्चा पश्चाताप कर अपनी माता की शपथ खाकर प्रतिज्ञा कर कि अब से ''नौरोज'' का मेला नहीं होगा। नहीं तो आज इसी तेज धार कटार से तेरा काम तमाम करती हूँ। अकबर का खून सूख गया। पानीपत, मालवा, गुजरात और खान देश के सेना नायक के दोनों हाथ थर–थर काँपने लगे। उसने कभी सोचा भी नहीं होगा कि सम्राट अकबर आज एक राजपूत महिला बाईसा के चरणों में होगा।अकबर बोला–मुझसे पहचानने में भूल हो गई....मुझे माफ कर दो माँ !इस पर किरण देवी ने कहा – आज के बाद दिल्ली में नौरोज का मेला नहीं लगेगा और किसी भी नारी को परेशान नहीं करेगा। अकबर ने हाथ जोड़कर कहा – माँ, आज के बाद कभी मेला नहीं लगेगा। उस दिन के बाद कभी मेला नहीं लगा।इस घटना का वर्णन महाराणा प्रताप के प्रतापी अनुज शक्ति सिंह के वंशजों के यशस्वी व्यक्तित्त्व को दर्शाने वाले एक ऐतिहासिक मध्यकालीन डिंगल भाषी काव्य–ग्रन्थ कवि गिरधर आशिया विरचित 'सगत रासो' में पृष्ठ–संख्या 632–633 पर उल्लिखित है। यहाँ यह भी उल्लेख करना ठीक रहेगा कि कुछ इतिहासकारों के मतानुसार किरण देवी का नाम जयावती या जोशीबाई था।यही नहीं, बीकानेर संग्रहालय में लगी एक पेटिंग में भी इस घटना को निम्नलिखित दोहे के माध्यम से बताया गया है –

''किरण सिंहणी–सी चढ़ी
उर पर खींच कटार।
भीख माँगता प्राण की
अकबर हाथ पसार।।''

अकबर की छाती पर पैर रखकर खड़ी वीर बाला किरण का वह चित्र आज भी जयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित है।अकबर के पश्चात्

– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

(शेष अगले पृष्ठ पर)

अनुसंधान

(पृष्ठ–4 का शेष भाग)

जहाँगीर (1605–1627) सम्राट हुआ। यह भी कला और साहित्य–प्रेमी था। 'रागमाला' के एक ध्रुवपद में जहाँगीर को संगीत के अंग–अंग में निपुण तथा भरत एवं मतंग में छानबीन करने वाला बताया है। इसके दरबार में भी सहस्रों गायिकाएँ और नर्तकियाँ अपनी कला का प्रदर्शन करती थीं। योग्यतानुसार पुरस्कृत भी होती थीं। इसके दरबार में जहाँगीर दाद, परवेज दाद, खुर्रम दाद, मक्खू, हमजान, चतुर अथवा छतर खाँ और तानसेन के कनिष्ठ पुत्र बिलास खाँ प्रसिद्ध गायक थे। जहाँगीर के संगीत–प्रेम का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि उसने इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय के संगीत–गुरु एवं राजदूत बख्तर खाँ को एक मुक्ता माला व दस सहस्र हाथी दिए थे। उस्ताद मुहम्मद को भी रुपयों से तुलवाया तथा हौदे सहित हाथी दिया था।जहाँगीर की बेगम नूरजहाँ भी संगीत की बड़ी प्रेमिका थी। सन्ध्या के समय वह प्रायः कविता रचती और गाती थी। कहते हैं कि उन दिनों उससे अधिक सुन्दर कोई नारी नहीं थी। उसका सौन्दर्य संगीतमय था।इसके शासन–काल में सोमनाथ कृत राग –विबोध (1610) व दामोदर मिश्र कृत संगीत दर्पण (1625) जैसे संगीत के कुछ मौलिक ग्रन्थ भी लिखे गए। संगीत दर्पण का गुजराती तथा हिंदी में अनुवाद भी हुआ है।जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात् शाहजहाँ (1627–1658) गद्दीनशीं हुआ। गायन और सितार में सिद्धहस्त इस सम्राट के चातुर्य से अनेक सूफी सन्त तक प्रभावित थे। उसने संगीत सम्मेलनों और प्रतियोगिताओं के आयोजनों के अतिरिक्त संगीतज्ञों को प्रश्रय भी प्रदान किया था। इस काल के दरबारी संगीतज्ञों में जगन्नाथ, रामदास, महापात्र, सुखसेन, सूरसेन, बुरंग खाँ,लाल खाँ, मिर्जा जुलकरबेन के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। और 1630 में इसने बिलास खाँ के दामाद लाल खाँ को 'गुन समंदर खाँ' की उपाधि दी। इनके पुत्रगण भी शाहजहाँ के ही आश्रित थे। शाहजहाँ ने 'रस गंगाधर' और 'गंगा लहरी' के रचनाकार जगन्नाथ को 'महा कविराय' की उपाधि से विभूषित किया था। शाहजहाँ की मुद्रा से अंकित ध्रुपद वास्तव में गुन समंदर खाँ के पुत्र खुशहाल खाँ की रचनाएँ हैं। शाहजहाँ ने अपने युग में प्रचलित बख्शू रचित सहस्रों ध्रुवपदों का संग्रह कराया।इस युग के सर्वाधिक लोकप्रिय वाद्य गिटार और जीटर थे, जिनके प्रख्यात् वादक क्रमशः सुखसेन और सूरसेन थे।इस काल में ही 3–4 दिनों तक पूर्वी भारत में 'अचल' नाम से चलने वाला संगीतमय मेला काफी प्रसिद्ध था। कथक नृत्य का प्रचलन भी इस काल में सर्वाधिक हुआ। शाहजहाँ के बाद गद्दीनशीं हुए औरंगजेब (1659–1707 ई.) को कुछ लोग एक ईमानदार और मेहनती शासक मानते हैं। वे उसे अनुशासन प्रिय व विलासिता से दूर रहने वाला मानते हैं। इनका मानना है कि वह भीरु और रूढ़िवादी मुस्लिम था, इसी कारण उसे 'जिन्दा पीर' कहा जाने लगा।पर यह भी सच है कि औरंगजेब न तो भारतीय संगीत की दार्शनिकता से परिचित था और न ही उसकी अध्यात्मपरक सौन्दर्यानुभूति से। उसने अरबी संगीत की भाँति उसे केवल मनोरंजन का साधन ही माना। इन दोनों के मिश्रण का परिणाम यह हुआ कि भारतीय संगीत के आत्मिक सौन्दर्य के विकास की धारा समाप्त हो गई।कुछ इतिहासकारों का मानना है कि शाहजहाँ के काल में संगीतज्ञों की विलासिता बढ़ जाने के कारण औरंगजेब यह समझने लगा कि संगीत मानव को पशु–तुल्य और अधर्मी बना देता है, अतः उसने गद्दीनशीं होते ही संगीतकारों का संरक्षण और राज्याश्रय बन्द कर दिया,किन्तु आचार्य्य बृहस्पति के अनुसार वह राज्याभिषेक के बाद भी लगभग एक दशक तक संगीत का आनन्द लेता रहा। औरंजजेब ने सम्भवतया 1667–1668 ई. में संगीत को निषिद्ध घोषित किया और गायकों को दरबार से भी निष्काषित कर दिया। शोकाकुल संगीतज्ञों ने जब वाद्य–यन्त्रों सहित संगीत की अर्थी निकाली तो सम्राट ने कहा कि इन्हें इतना नीचे दफन कर दिया जाए कि ये फिर सिर न उठा सकें।उसने संगीत को छोड़ देने वालों को पेंशन देकर सम्मानित भी किया। 49 वर्ष की आयु तक संगीत सुनने के शौकीन, सिद्धहस्त वीणा वादक और संगीतज्ञों को उपाधियाँ छेकर सम्मानित करने वाले औरंगजेब द्वारा संगीत पर प्रतिबन्ध लगा देने के पीछे बहुत से ऐसे राज हैं जिन्हें समझना आवश्यक है। यह भी कहा जाता है कि उसके समय में कलाकारों द्वारा पखावज का प्रयोग न करने से भी वह काफी क्षुब्ध था। इलियट मानते हैं किऔरंगजेब ने संगीत के क्षेत्र में कोई हस्तक्षेप नहीं किया, परन्तु इमाम शफी की सलाह पर प्रतिबन्ध लगाया। सुखीसेन, सरस् नैन, रस बैन, बिसराम और खुशहाल खाँ 'गुन समन्दर' तथा किरपा 'मृदंगराय' औरंगजेब के कृपापात्र कलाकार थे। आश्चर्य की बात है कि संगीत पर प्रतिबन्ध होने के बाद भी सर्वाधिक संगीत–ग्रंथों का अनुवाद और प्रणयन औरंगजेब के काल में ही हुआ।औरंगजेब के बाद उसका पुत्र बहादुर शाह (1709–1712) सम्राट बना। महाकवि देव के शिष्य रहे और 'सदारंग' के नाम से मशहूर हुए नेमत खाँ इनके दरबार में थे। बहादुर शाह के बाद जहाँदार शाह (1712–1713) सम्राट हुआ। वह लाल कुँवर नामक नर्तकी को बेहद प्रेम करता था। यही नहीं, उसने इसके सगे–सम्बन्धियों को उच्च पदों पर भी आसीन कर दिया था।मुहम्मद शाह रंगीला (1719–1784) अंतिम मुगल बादशाह था, जो संगीत से प्रेम करता था और जिसने संगीतज्ञों को आश्रय भी प्रदान किया।इसके दरबार में 'कलावन्त' और 'कव्वाल' नाम से गायकों के दो प्रमुख वर्ग थे। संगीत और नृत्य–शिक्षा की भी समुचित व्यवस्था थी। इसके काल में सदारंग और अदारंग प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। इनके अतिरिक्त नूर खाँ, लाद खाँ, प्यारे खाँ, जानी, गुलाम रसूल, शकूर, मक्खन, तीथू , मिद्धू, मुहम्मद खाँ, छज्जू खाँ भी प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। सोज और मर्सिया गाने के प्रकारों का प्रचार भी इसी काल में हुआ।1738 ई. में हैदराबाद के प्रथम निजाम के साथ यहीं के एक अमीर नवाब दरगाह कुली खाँ भी दिल्ली आए थे और उन्होंने नादिरशाही युग के दर्जनों गायक–वादक–नर्तक कलाकारों, रसिकों तथा सूफियों का इतिवृत्त लिखा है। इसका संक्षिप्त उर्दू अनुवाद मौलाना हसन निजामी ने 'पुरानी दिल्ली के हालात' नाम से किया है।मुहम्मद शाह के साथ ही श्रेष्ठ ध्रुवपद–रचयिता और मर्मज्ञों का अभाव होने लग गया।

– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल
संगीतज्ञ, लेखक, सम्पादक, कवि, चित्रकार
"संगीत–सदन"
94, महाविद्या कॉलोनी,
द्वितीय चरण, मथुरा।
पिन कोड : 281 001
Mob : 9897247880(Whatsapp)
8851402815(jio)
E-mail : rkagrawal19256@gmail.com

– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

POWER OF COMPOUNDING IN MUTUAL FUNDS

What is the power of compounding?

Mathematically speaking, compounding is defined as, 'the increase in the value of an investment, due to the interest earned on the principal, as well as the accumulated interest.'

Simply put, it is a strategy that makes your money work for you. It could be regarded as a powerful toolto grow your wealth. You can use the power of compounding to plan your future goals, such as retirement.

Simple interest means you earn interest on your principal. But with compound interest, you earn interest on the principal amount as well as the accumulated interest amount over successive periods.

Benefits of the power of compounding

One of the biggest benefits that investors can appreciate about the power of compounding is the value of time. With time, you could gain returns, and the yields on these returns could further generate returns; thus, helping to increase your investments quickly.

Saving money and earning compound interest amount every year is a good thing. But what if you were to invest a fixed amount each month? This small act could boost your returns over time. Let's find out how that is possible.

When you regularly invest over time, your returns could accumulate at a much faster pace.

Imagine you invest Rs. 5,000 every month. The interest on this amount is 10% per annum. The below table reveals how your investment returns would look like over time:

Years/ Rs. (in lakhs)	5	10	20	25	30
Expected amount	3.9	10.3	38.3	66.9	114
Amount invested	3	6	12	15	18
Wealth Gain	0.9	4.3	26.3	51.9	96

The above table is to explain the concept of power of compounding and is shown for illustration and explanatory purposes only

Power of Compounding and mutual funds

We have talked about the benefits of investing a fixed amount regularly to benefit from compound interest. But there is a big question to be addressed. Where can an investor put his money to achieve the full benefit of compounding?

The answer is mutual funds. As an investment avenue, mutual funds are designed in a way to magnify the benefits of compounding. This is possible through Systematic Investment Plans (SIPs).

Here's how it works:

You can invest a fixed sum in mutual funds regularly through a Systematic Investment Plan (SIP). This can be monthly, quarterly or semi-annually. You can select the fund of your choice,

Key rules to enable the power of compounding

Control your expenses

The principle of compounding works in the same way whether you invest Rs. 100 or Rs. 10,000. However, if you invest a substantial amount, the interest you earn can also increase significantly.

Start early

There is nothing like making an early start in investments. Ideally, you should start investing the moment you begin earning.

Be disciplined

To create a healthy corpus and meet your financial goals on time, it is critical to have investment discipline. Investing regularly at the start of your investment journey can ensure discipline. It is wise not to skip your SIP payments. When you regularly invest month aftermonth, you not onlyincrease your savings but also develop investment discipline. This is a vital habit if you wish to achieve financial success.

Learn patience

Most investors look to chase quick returns. But in the attempt to earn quick money, they can make mistakes that could result in big losses. One must invest patiently that could reap healthy returns over time.

MRIGAASHREE CAPITAL PVT. LTD.
Mutual Funds | Insurance | PMS | Equity | Commodities | Currency | Bonds | IPOs | Fixed Deposits

Source: - www.franklintempletonindia.com

शास्त्रीय गायन व नटवरी कथक नृत्य की अनूठी प्रस्तुतियों एवं भव्य सम्मान–समारोह के साथ सम्पन्न हुआ द्वि–दिवसीय परम्परा समारोह 2020

संगीत–विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण नाम के अनुरूप संगीत व चित्रकला की सच्ची साधिका थीः पद्मश्री मोहनस्वरूप भाटिया

इस आयोजन से नारियों के प्रति असहिष्णु लोगों को लेनी चाहिए प्रेरणाःआचार्य पण्डित अनुपम राय

पहले दिन पं. समीर भालेराव व पूर्वी भालेराव के गायन और सुश्री श्रिया पोपट के कथक नृत्य ने बाँधा समां

दूसरे दिन युवा गन्धर्व अनुरत्न राय की प्रस्तुतियों ने किया श्रोताओं को मंत्रमुग्धविदुषी रीता शर्मा राय को मिला संगीत परम्परा रत्न सम्मान।देश की 11 लब्ध प्रतिष्ठित हस्तियों को मिला मंजुश्री सम्मानमथुरा। संगीत विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण की एकादश पावन स्मृति में भारत भवन कल्चरल ट्रस्ट द्वारा संगीतांजलि, मुम्बई एवं राष्ट्रीय संगीतज्ञ परिवार के विशेष सहयोग से आयोजित परम्परा 2020 के प्रथम दिवस का शुभारंभ शंखनाद के मध्य मुख्य अतिथि पद्मश्री मोहन स्वरूप भाटिया द्वारा संगीत–विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप–प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। मुख्य अतिथि पद से पद्मश्री भाटिया ने कहा कि मंजु कृष्ण जी अपने नाम के अनुरूप संगीत और चित्रकला की सच्ची साधिका थीं। उन्होंने जीवनभर निःस्पृह भाव से संगीत की सेवा कर देश–विदेश के हजारों लोगों तक उसे पहुँचाया। उनकी पावन स्मृति में आयोजित यह आयोजन कोई समारोह न होकर उनके प्रति सच्चा कृतज्ञता अनुष्ठान है।

नृत्य–संगीत समारोह की पहली प्रस्तुति के रूप में सुविख्यात् गायक पं. समीर भालेराव एवं उनकी सुयोग्य पुत्री और शिष्या सुश्री पूर्वी भालेराव (झाँसी) ने राग रागेश्री में पहले विलंबित रूपक ताल में निबद्ध 'राखो पत मोरी, दीनन के दुखहारी', फिर तीनताल में 'सजन बिन सूनी' तत्पश्चात् एकताल में 'राग संग रागिनी' की प्रस्तुति कर ऑनलाइन जुड़े देशी–विदेशी श्रोताओं और दर्शकों को रससिक्त करते हुए संगीत–विदुषी को श्रद्धांजलि दी। समारोह की दूसरी प्रस्तुति थी प्रख्यात् नाद और तालयोगी आचार्य पण्डित अनुपम राय की प्रमुख शिष्या सुप्रसिद्ध युवा कथक नृत्यांगना सुश्री श्रिया पोपट (मुम्बई) का नटवरी कथक नृत्य, जिसके अंतर्गत उन्होंने जहाँ लय – बांट और तत्कार आदि का अद्भुत प्रदर्शन किया वहीं अनूठी भाव– भंगिमाओं द्वारा सुधी दर्शकों की भरपूर वाहवाही ली।समारोह के अध्यक्ष आचार्य पं. अनुपम राय (मुम्बई) ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि मैं संगीत–विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण जी के संगीत वैदुष्य और सहज व्यक्तित्त्व से सदैव प्रभावित रहा।मेरे उनके पारिवारिक सम्बन्ध थे और वह सही मायनों में सच्ची कलाकार थीं। मेरे अनन्य मित्र डॉ.राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल जी द्वारा उनकी पावन–स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित इस आयोजन से नारियों के प्रति असहिष्णु लोगों को प्रेरणा लेनी चाहिए।

संगीत परंपरा समारोह के दूसरे दिन का कार्यक्रम दो चरणों में सम्पन्न हुआ। प्रथम चरण में युवा गन्धर्व अनुरत्न राय, मुम्बई के शास्त्रीय गायन की अद्भुत और अनूठी प्रस्तुति हुई। उन्होंने अपने गायन से पूर्व संगीत–विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा कि यह कोई समारोह नहीं है। यह तो उनको श्रद्धांजलि स्वरूप मेरी एक छोटी–सी स्वरांजलि है। उन्होंने अपने गायन का प्रारंभ मंजु कृष्ण जी के ही सर्वाधिक प्रिय राग जोग में एक विलंबित ख्याल की अद्भुत प्रस्तुति से किया। तत्पश्चात् अपने पिता व गुरु आचार्य पं. अनुपम राय द्वारा राग अहीरी व तीनताल में निबद्ध द्रुत रचना – 'तुम सन मेरो मन लागा' व इसकी जोड़ी की ही राग चारुकेशी व झपताल में निबद्ध रचना – 'सुन प्यारी सांची कहूँ मान मान' सुनाकर न केवल गुनिजनों को बल्कि उपस्थित सभी रसिकों को रससिक्त कर दिया।

दूसरा चरण सम्मान–समारोह का था। इसके प्रारम्भ में डॉ. राजेन्द्र कृष्ण द्वारा संगीत–विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण का परिचय देते हुए परम्परा समारोह पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने 'संगीत परम्परा रत्न' तथा 'मंजुश्री' सम्मान से सम्मानित होने वाले सभी महानुभावों का परिचय भी विविध क्षेत्रों में किए गए उनके अनुकरणीय योगदान का उल्लेख करते हुए कराया। इस अवसर पर प्रतिवर्ष एक महिला कलाकार को उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए जाने वाले अति प्रतिष्ठित संगीत परम्परा रत्न सम्मान से विदुषी रीता राय (मुम्बई) को नटवरी कथक नृत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं हेतु नवाजा गया। सम्मान–पत्र का वाचन करते हुए डॉ. राजेन्द्र कृष्ण ने कहा कि–

परम्परा के हित किए, तुमने बहुत प्रयत्न।इसीलिए हमको लगीं, तुम परम्परा–रत्न।।

तुम पर परम्परा – रत्न, नटवरी मान बढ़ाया।

अनुपम गुरु पा धन्य हुईं, अनुपम यश पाया।।

पाकर तुमको रजक, धन्य हो गई ये धरा।

यूँ ही चलती रहे, परम्परा पे परम्परा।।

इसी प्रकार मंजुश्री सम्मान प्राप्त करने वाली सभी विभूतियों का भी एक कुण्डलिया के माध्यम से स्वागत करते हुए कहा कि–

मंजु आपके काज हैं,और मंजु पहचान।
हमहुँ मंजु मन दे रहे,मंजुश्री सम्मान।।
मंजुश्री सम्मान, मंजु इस आयोजन में।
सदा रहो तुम मंजु, मंजु जन–जन के मन में।।
कहें 'रजक' मन मंजु–मंजु हो रहा आज है।
लख तव कारज मंजु,मंजु मन करत नाज है।।

मंजुश्री सम्मान पाने वाली 11 विभूतियों में 88 वर्षीय विश्वप्रसिद्ध संगीत लेखक, सम्पादक, अनुवादक व फिल्म निर्देशक डॉ.लक्ष्मीनारायण गर्ग (हाथरस)सुप्रसिद्ध संगीत चिंतक, लेखक व सम्पादक डॉ. मुकेश गर्ग (नई दिल्ली) संगीत लेखन, प्रशिक्षण व संरक्षण–संवर्द्धन में प्राणपण से जुटे तबला वादक पं. विजय शंकर मिश्र (दिल्ली) शास्त्रीय गायन,तबला व संगीत लेखन के लिए अहर्निश समर्पित पं. देवेंद्र वर्मा 'ब्रजरंग'(फरीदाबाद)पद्मविभूषण पण्डित किशन महाराज के वरिष्ठ शिष्य सुप्रसिद्ध तबला वादक एवं संगीत–गुरु पं. ललित महन्त (उज्जैन) राष्ट्रपति द्वारा फर्स्ट लेडी अवार्ड से सम्मानित प्रथम महिला सन्तूर वादिका प्रो. डॉ. वर्षा अग्रवाल (उज्जैन) इटली की सुप्रसिद्ध कम्पनी के जनरल मैनेजर व पद्मविभूषण किशन महाराज के ही शिष्य प्रसिद्ध तबला वादक पं. सुसमय मिश्र (दिल्ली) प्लास्टिक सर्जरी के विख्यात् सर्जन और गायन व चित्रकला मर्मज्ञ प्रो. डॉ. कपिल अग्रवाल (मुम्बई) भोपाल न्यू सेंट्रल जेल के चित्रकला शिक्षक सुप्रसिद्ध चित्रकार डॉ. शैलेन्द्र हरि नामदेव (भोपाल) बाल कहानी,लघु कथा, काव्य, नाट्य–लेखन के क्षेत्र में चर्चित डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' (मथुरा) और व्यंग्य, लघुकथा, कहानी व उपन्यास लेखन में दक्ष श्रीमती चेतना भाटी (इंदौर) जैसी हस्तियाँ श्ज्ञामिल थीं।इस अवसर पर द्विदिवसीय समारोह में गायन व नृत्य की अनूठी प्रस्तुतियाँ देने वाले चारों कलाकारों– पं. समीर भालेराव व सुश्री पूर्वी भालेराव (झांसी) तथा युवा गन्धर्व अनुरत्न राय (मुम्बई) को शास्त्रीय गायन एवं प्रख्यात् युवा नृत्यांगना सुश्री श्रिया पोपट (मुम्बई) को कथक नृत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु सम्मान–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि पद्मश्री मोहनस्वरूप भाटिया को सांस्कृतिक क्षेत्र एवं समारोह अध्यक्ष आचार्य पण्डित अनुपम राय को संगीत के क्षेत्र में अविस्मरणीय व अनुकरणीय योगदान के लिए सम्मान–पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया।समारोह के अध्यक्ष आचार्य पण्डित अनुपम राय, मुम्बई ने संगीत–विदुषी श्रीमती मंजु कृष्ण जी का भावपूर्ण स्मरण करते हुए कहा कि संगीत और चित्रकला आदि की साधना के अतिरिक्त संस्कृति व समाज–सेवा के क्षेत्र में भी किए गए उनके अनुकरणीय और अनुसरणीय योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।अंत में ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष संगीताचार्य डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल द्वारा मुख्य अतिथि, अध्यक्ष सहित सभी कलाकारों, सम्मान प्राप्तकर्ताओं और ऑनलाइन जुड़े दर्शकों व श्रोताओं सहित प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडियाकर्मियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

समृद्ध भारत वसुंधरा

झाँकी

शास्त्रीय गायन व नटवरी कथक नृत्य की अनूठी प्रस्तुतियों एवं भव्य सम्मान–समारोह के साथ सम्पन्न हुआ द्वि–दिवसीय परम्परा समारोह 2020